संसदीय कार्य मंत्री की भूमिका

डॉ० भीष्म नारायण सिंह
पूर्व संसदीय कार्यमंत्री एवं राज्यपाल

सिर्फ स्पीकर की जवाबदेही सदन चलाना नहीं है। वो तो अध्यक्ष है। रूल्स के मुताबिक नियम के मुताबिक, संविधान के मुताबिक चले वो तो देखना ही देखना है। लेकिन उनके सहयोग के लिए पूरे सदन के सदस्यों का, और खासकर के जो ये मुख्य सचेतक लोग है, इनकी भूमिका है विधिवत यह जाना जाए। ये जरूरी होता है।

और संसदीय कार्यमंत्री को तो सच पूछिए तो ये कहा जाता है कि सभी मंत्रियों के मंत्री है वे। उनको भी कुछ – कुछ दल से ऊपर रहना पड़ता है। चूंकि वह सब संसद सदस्यों से अच्छा संबंध नहीं रखेंगे तो संसद चलाने में कैसे मदद देंगे वो?

एक तरफ तो सुनने में बड़ा रोचक है और अक्सर यही होता है कि प्रधानमंत्री को सबसे

ज़्यादा जिस पर विश्वास होता है। उसी को संसदीय कार्यमंत्री बनाया जाता है।

चूंकि गवरमेंट बिज़नेस की जवाबदेही सारी उन्हीं के ऊपर है। सरकारी जितनी गवरमेंट बिज़नेस है संसदीय कार्यमंत्री के जरिए ही संसद में जाता है। यह जान लिया जाए। लोकसभा में जाया करता है। तो यह तो बड़ा रोचक है– बड़ी भारी अधिकार है। सबके मंत्री है। लेकिन बड़ी भारी जवाबदेही है। हकीकत यह है। और सबसे महत्वपूर्ण काम वह जो करते हैं– विपक्ष और सत्ताधारी पक्ष में मेल–मिलाप से। सच पूछा जाए तो अच्छा रिश्ता को बढ़ावा देना उसमें सहयोग करना ये उनका सबसे महत्वपूर्ण काम है। और मेरे समझ में सबसे कठिन काम है। चूंकि कहा जाता है कि ऐसे ही मनुष्य को मैनेज करना एक आसान काम नहीं है यहां तो आपको नेताओं को मैनेज करना होता है।